

सामित्रियों

सामाजिक सामित्रियों का जन्म विटेन में हुआ
है लेकिन विभागीय सामित्रियों का जन्म
अमेरिका में हुआ। 1919 के डाय. ५ अक्टूबर
में सामित्रियों १५० बालों में से ही आजादी के बाद
अनु. ११४ के लक्ष्य सामित्रियों की काष्ठनी उत्तर १५४
गांधी अंसद की रापांची १/३ रखी गयी है।

लोरप / रपांची	अनु.
$L.S/R.S = \frac{1}{10} = \frac{345}{3}$	100(3)
$V.S/V.P. = \frac{1}{10} \text{ or } 10$	विभा. सामित्रियों
$\frac{1}{3}$	अंसद
$\frac{345}{3} = 115$	जुलाई

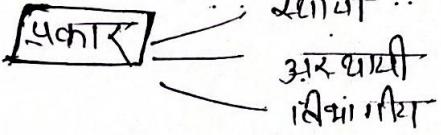
सामित्रियों का प्रदूष / कार्फ़:-

- सामित्रियों की कार्पिकी गोपनीय होती है। अतः सामित्रियों की दलगत राखनी वा इसके विपक्ष की सामाजिक अभियानों का लाभ भी जाता है
- वर्तमान वैश्वीकरण के सामाजिक - आर्थिक परिवर्त्याओं में से ही समाज के सामाजिक संरचनाएँ भौतिक विषयों को नियंत्रि
त होना पाते अतः सामित्रियों का प्रदूषण में शुभांशु
एवं विद्योग्यक वर्णन दिया जाता है
- सामित्रियों का सामाजिक प्रशासन व वित्तीय विश्वासा वा विचारण लगा रहता है तथा इसी सामित्रियों
का आम जनता का विपर्यय दिया जाता है जैसे- लोक लेजा सामित्रि,
में जनता के विविध विवरणों का विवरण आदि का वर्तन लगाती है।
- सामित्रियों की कार्पिकी गोपनीय होती है। अतः अनेक
प्राप्तियों पर वृद्धि ही सामित्रियों द्वारा करवाया जाता है
करा देती है। विवासी शब्द की कार्पिकी उचार शब्द
द्वारा देती है। भावना का सामाजिक प्रदूष द्वारा देती है।

समस्याएँ

- 1) सामित्रियों की ने विप्राभूत वीठ के द्वारा ही देते हैं और
ही प्रोग्रेस विवितियों को सामित्रियों में रखा जा रहा है
जैसे अंसद का पक्ष के लोगों का ही ज्यादा एक
दृष्टि है।

- **सामाजिक समितियाँ** अपनी रिपोर्ट बॉक्स को देती हैं लेकिन बॉक्स नहीं भवति तो प्रधान चर्चा के लिए प्रस्तुत करता है और इसी अद्वितीय सम्भावा जा रहा है।
- सामाजिक अवस्था औपचारिकता माल बनकर इह ग्राम है जोगांडि भिसी फुटकै, विधेयक ५८ केरी कर्ता के लिए वरका प्रयोग किया जाता है अरकारी कार्यों की जगह व्यक्तिगत अवार्ड श्रमिकों को साधन बनाया जा रहा है।



① सामाजिक समितियाँ :-

ऐसी समितियाँ जो विरक्ति करती हैं जिनके सदस्य/अधिकारी का कार्यकाल, वर्ष का होता है। जिनका घुनाल PR with STV विधेयक में होता है। इसमें प्रतीक्षा समिति एवं अन्तर्राष्ट्रीय समिति विपक्ष वक्ता देवों को रखा जाता है।

Ex:- ① PAC (Public account Committee) लोकलेशन समिति

इसमें कुल १२ सदस्य होते हैं $\Rightarrow 15 + 7 \Rightarrow$ संघीयता सदस्य

— इस समिति का गठन भारत सरकार अधिनियम के अन्तर्गत ५६ली वार १९२१ में —

— यह समिति लोक व्यापार प्रस्तुत सामाजिक रिपोर्ट की जांच करती है औ पता लगाती है कि लोक व्यापार व्यापार दृष्टि सही पर्याप्त नहीं हुआ है या नहीं, व्यवसाय / आन्तरिकता की जांच करती है एवं प्रत्यक्ष व्यापारी को लिए प्रार्थना देता है यह सबसे पुरानी वित्तीय समिति है।

Note:- परंपरा बनायी गई है - इसका अद्यता ¹⁹⁶⁷ विपक्ष से रखा जाता है।

समितियों की पुनाव व्यापक विपक्ष करता है * CA.G. अम. दर्शनीक वे प्रधानमंत्री की श्रमिकों के लिए हैं

PR with STV -

સ્વાર્થપાત્રિક ૩ ઘણી સામાજિક (PUC) રૂ

- 1964 में लूप प्रैमियर सामिट की रिपोर्ट में दर्शाया गया राष्ट्रीय।
 - 1974 में अंदरवासी वर्ष 15 से लगातार 22 - (15+7)
 - PR विह सर्व सिस्टम द्वारा नियन्त्रित है।
 - उचिकाल 1 वर्ष, तो यह आमतौर पर अंदरवासी वर्ष का अनुकूल है।
 - अंदरवासी : 1.5 31 एकड़ा घोर 1.5 अंदरवासी वर्ष 4 (R.5+4)

फार्म :- इस विज्ञानिक प्रातिवेदन के लिए यहाँ, यहाँ की विभिन्न की जांच,

 - मा. उचिक संबंधित ऐसी कार्य जांच जो लोक जीवन के प्रावक्तव्य की जी नियंत्रण होता है वे 1.5 अंदरवासी घोर के अनुकूल होते।

ही कर सकती :- यह राजनीतिक विद्या के अनुकूल है। तो यह यहाँ

 - देनांश्च वे विद्याएँ से युक्त यान्त्रिकी,
 - यह विनोद विद्या, विकास विद्या जैसी है।

ਕੀਨੀਂ :— ਕੀਨੀਂ ਹਾਰ- ਪ੍ਰਭਾਵ ਵਿੱਚ ਹੋ

- 1. वर्ष के 10-12 में अधिक सामाजिक और राजनीतिक विद्या का अभ्यास
की जरूरत है।

— 2. नवीनीकी आपलों की विद्या (⊗) 8003. जिन्हें एकल सामाजिक विद्या

प्रावक्त ल-समिति : 1921 अगस्त

- इतिहासिक वित्तीय जैन परमार्थ की इतिहासिक पर 1950 4
 → सदरम् अ. 1956 में 25 मे लोकोत्तर 30. [from C.S. RX] 1950 4
 → कापिकाल (वर्ष); दुनिया PR will STV - मनोधर
 → अपार्टमेंट अपार्टमेंट + सामान्य बल का
 → कार्य पर्याप्ति सदरम् नहीं हो सकता,

गार्ड: वांजट के सम्मालित उपकरणों की जांच फैसलानी तक हुए हैं, अपनाएं करविए।

- ਸਾਮਾਨੀ ੧੦੫੪-੮ ਪਰ ਝੋਲੀਂ ਤੰਡੀ ਕੇ ਵੈਖਣ ਅਥਵਾ ਲੋਗ ਪਾ ਪੜ੍ਹੇ, ਭੁਲਾਂ ਕੇ ਟੀਂਹੇ ਪੈ ਰਿਹਾਂ -
- ਸਾਮਾਨੀ ੧੦੫੪-੯ ਪਰ ਝੋਲੀਂ ਤੰਡੀ ਕੇ ਵੈਖਣ ਅਥਵਾ ਲੋਗ ਪਾ ਪੜ੍ਹੇ, ਭੁਲਾਂ ਕੇ ਟੀਂਹੇ ਪੈ ਰਿਹਾਂ -
- ਸਾਮਾਨੀ ੧੦੫੪-੧੦ ਵੱਡੀ ਤੰਡੀ ਕੇ ਵੈਖਣ ਅਥਵਾ ਲੋਗ ਪਾ ਪੜ੍ਹੇ, ਭੁਲਾਂ ਕੇ ਟੀਂਹੇ ਪੈ ਰਿਹਾਂ -

- पहले विजय की खात्र लक्ष्मी-बांधु ने अपना देश और देश के लोगों की सुरक्षा के लिए अपनी जान दी।

- સાંખ્ય હાર વિદ્યાર્થીનું પર મર કુલ જી અકાતી,

— ਇਹ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਵੇਂਦੀ ਵਿੱਚ ਅਤੇ ਉਸ ਵਿੱਚ ਮੁਸਲਿਮਾਂ ਵੇਂਦੀ ਵਿੱਚ ਸ਼ਾਮਲ ਕੀਤੇ ਜਾਣ।

अनुभागी / नक्षे विभागी: → संलग्नकार समिति
 ये दो समितियाँ जो आवश्यकताएँ बनायी जाती हैं और आवश्यकता के समाप्त होने पर खत: समाप्त हो जाती हैं। इसका दूनाव रामान तरीके से लिपा जाता है औले ही अद्विक्षा/ सबस्य की त्रिपुरित कर देता है। कार्य / उपोष्टि देने के बाद ये समितियाँ खत: समाप्त हो जाती हैं।

Ex① संयुक्त संसदीय समिति (Joint Parliamentary Committee)

$$\begin{array}{rcl} \text{Total} & 45 = & 30 + 15 \\ (\text{max}) & \Downarrow & \Downarrow \\ & L.S & R.S. \\ & = 2 : 1 & \end{array}$$

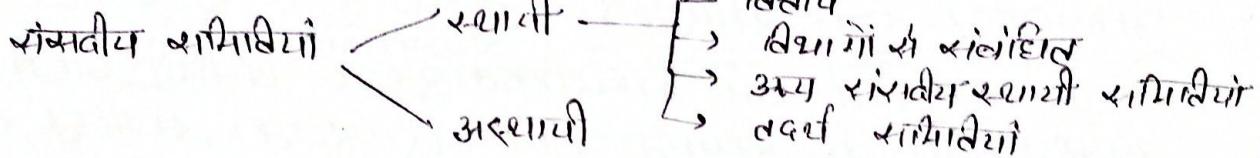
[if 30 then 20 & 10]

— इसी विशेष मामलों की जांच के लिये इसका गठन दिया जाता है। सामान्यतः दो सदनों में उपर्युक्त हूपे विवादों का समाधान प्रयत्नत करते हैं। जैकि - वित्त वेतन एवं लोटपाशक मिलों पर इसका गठन, यह संयोगदाय दोनों के द्वारा गठन किया जाता है। (संलग्नकों संविधानित संलग्नकार समिति)

Ex② प्रबन्ध समिति एवं संयुक्त प्रबन्ध समिति (संलग्नकार समिति)

- प्रबन्ध समिति: दो समितियाँ दोनों के लिये गठित की जाती है जिसका उद्देश्य संसदीय विधायिका द्वारा विभिन्न विधायिकाओं पर विभिन्न कानूनों के अधिकारों के बीच विविक्षण विवरण देना है।
- संयुक्त प्रबन्ध समिति: दो समितियाँ दोनों के लिये गठित की जाती है जिसका उद्देश्य संसदीय विधायिका द्वारा विभिन्न विधायिकाओं पर विभिन्न कानूनों के बीच विविक्षण विवरण देना है।

संलग्नकार समिति: इसमें विदेशियों के लिये गठित प्रबन्ध संयुक्त समितियों समिकालीन होती है; जिनका गठन विशेष विदेशियों द्वारा किया जाता है जो विदेशियों के लिये इसका उपयोग जाता है। इसके द्वारा विदेशियों की ही संविधानित होती है एवं जोकि भारा जो कार्य पकाती अपनायी जाती है, वह "कार्य पकाती के लियों" नह तर चाहेकर / समाप्ति के लियों द्वारा गठित होती है।



विदेशी सामाजिक

(प्रलिपि: 25. अक्ट 1956 क)

① भूतकालन सामाजिक	30 सप्तर्षी (L.S.)	1 वर्ष	7.5 लाख रुपये संप्रदाय
② लोकलेखा सामाजिक	22 (15+7)	1 वर्ष	दोनों सम्मोहन राज विवरिति
③ भरकारी आकृतों एवं नेतृत्वी सामाजिक	(प्रलिपि: 15. 1974 क) 22 (15+7)	—	—

विभागों के औलंडा रूपांकी सामाजिक

प्रलिपि: 20. 24. 1970. 1. निकै शोलांगनार

में भारत राजकार्य के विभिन्न प्रकारों / विभिन्न राज्यों में उपेक्ष सामाजिक
में 31 सप्तर्षी होते हैं (21. L.S. + 10. R.S.) (कुप्रधार) लोकसभा के अपार्टमेंट
+ राज्यसभा के विभागों द्वारा 114. अर्थव्यवस्था जाता है (कुप्रधार
+ बाहर) 187 के रूपमें लेकर सामाजिक का लाभिकाल, वर्ष -

- ① वासिधर्म संबंधी विदेशीक
- ② घृण कार्य संबंधी सामाजिक
- ③ मानव संसाधन विकास संबंधी सामाजिक
- ④ उद्योग संबंधी सामाजिक
- ⑤ विद्या & धौर्योगिकी, परिवर्तन & तन संबंधी सामाजिक
- ⑥ परिवहन, पर्यावरण & संरक्षण संबंधी सामाजिक
- ⑦ विवरण & विविध कलाओं संबंधी सामाजिक
- ⑧ कार्यक्रम, लोक विकास तथा विद्या & वायु संबंधी सामाजिक
हो एवं सभासभा साचिवालय तारा सेवा एवं इनकी जाती हैं
- ⑨ कृषि संबंधी सामाजिक
- ⑩ रक्षा " "
- ⑪ विदेशी बायलों " "
- ⑫ अर्जी संबंधी सामाजिक
- ⑬ वित्त " "
- ⑭ ग्राम संबंधी सामाजिक
- ⑮ घोटालियपर शाहीतिक गोस संबंधी " "
- ⑯ शहरी विकास संबंधी सामाजिक
- ⑰ रसायन उर्वरक " "
- ⑱ कोटला & रेपत " "
- ⑲ रेल संबंधी सामाजिक
- ⑳ जल संसाधन संबंधी सामाजिक
- ㉑ ग्रामीण विकास " "
- ㉒ सामाजिक वाय & आधिकारिक संबंधी सामाजिक
हो एवं लोक सभा साचिवालय द्वारा जावा —

अन्य राष्ट्रीय समिति :—

१. कार्य पंचांग समिति

२०८४-

(१५)

कार्यकाल प्रियत्र
धुनगणि नियम जावेत्तर

अंदपाक बारा
नाम, निधि वित्त समिति

• विशेषाधिकार समिति

(१५)

“

तदेव

+

• सभा की लैलों से सरखों
की मनुष्य संबंधी समिति

(१५)

वर्ष

तदेव

+

• माहिलाओं की शक्तियां पुराने
कार्य संबंधी समिति

३०
(२०+१०)

वर्ष

अंदपाक लाप्ति १५
१.१ बारा-नामनिर्दिष्ट

• भरकारी आश्वासनों संबंधी
समिति

१५

वर्ष

अंदपाक लाप्ति १५-

• सभा पट्ट पर रखी गई
पक्षों संबंधी समिति

१५

वर्ष

तदेव

+

• पार्वतिका समिति

(१५)

वर्ष

तदेव

+

• भरकारी सरखों
की लैलों ए संकल्पों
संबंधी समिति

(१५)

वर्ष

तदेव

+

• अदीतरथ विधान संबंधी
समिति

(१५)

वर्ष

तदेव

+

• साधारण प्रयोग समिति

लियात्र

विधात्र

अदस्पता पक्ष
दोती है

• आवास समिति

१२

वर्ष

अंदपाक लाप्ति
—

• लाप्त के घों संबंधी राष्ट्रपति

(१५ (१०+५))

ए कार्यकाल
की लियात्र

दोसों सदसों
बारा-नियमित

• संसद सरखों की वेतन &
वर्ते संबंधी संपुत्र समिति

(१५ (१०+५))

वर्ष

अंदपाक लाप्ति —
सोने कार्यालय पक्ष
१०८८ वा १००-१०५ दर्शन

• ग्रन्थालय समिति

९ (६+३)

—

तदेव

+

• अंतर्राष्ट्रीय समिति

१५

विधात्र

अंतर्राष्ट्रीय —
लोक समाजालय पक्ष

• S.C & S.T की कल्याण
समिति —

३० (१०+६)

वर्ष

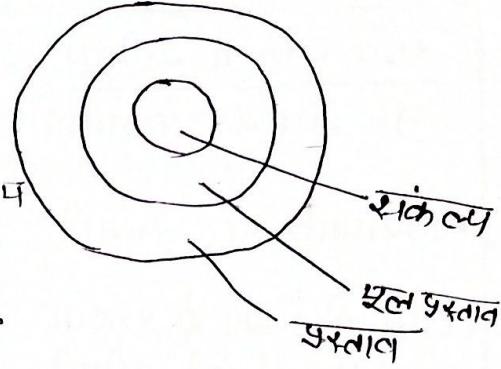
दोसों सदसों बारा
विधात्र

WAS

विधात्र

प्रवर्तन [MOTION]

यह संसदीय धारिया का अंग है। इसके माध्यम
से सरकार को नियंत्रित करके उत्तरदायी
वाक्य का उपराज दिया जाता है। जैसा:-



① काम रोको प्रवर्तन / अवागत प्रवर्तन (Adjournment motion)

ऐसी असाधारण धारिया लिखक एविलाइट करने पर इसकी
अपर्याप्त कार्यवाही को रोक दिया जाता है। जैसे विशेष बजले
पर ही चर्चा प्रतिवाद कराया जाता है। [L.S.M. 50
अवर-पों के दस्तावेज से लाया जा सकता है। R.S.M. 25]

काम रोको प्रवर्तन की नीति शब्द है। [2½ की वृद्धि]

I) नियंत्रित मामला होना चाहिए।

II) नियावाक मामला बुल्ले आदि कुड़ों की भाँड़ी xx

III) आविष्टांशीम आविष्टवासी, ज्ञापालय पे विचाराद्धि xx

IV) लोक महत्व का मामला विशेषाधिकार के पक्ष की xx.

for ex लोक धर्मा एवं काला- इन मामले में काम रोको प्रवर्तन
लाया जाय।

② नियंत्रित प्रवर्तन (Censure Motion):-

सरकार / विसी नियंत्रित बच्ची के हात दिए गए कार्यों की
आलोचना करने के लिये विषय पर प्रवर्तन लाता है।
इस प्रवर्तन में अधिकार कार्य करना होता है। जैसकर।

राष्ट्रपाति के एविलाइट करने पर इसके लिए अपेक्षा

Note. पार्टी परं L.S.M. 50 दस्तावेज से R.S.M. 25
देना आवश्यक नहीं है।

③ व्यावस्था का प्रश्न :- (Point of Order)

संसद की गारिमा एवं संवैधानिक धर्त्यों को बनाये रखने के लिये इस प्रतिवाद का उपयोग विषय जाता है। अपर्याप्ति या संसदीय प्रतिवाद के विषयों का उल्लंघन किया जाता है तो कोई भी सदस्य इस प्रतिवाद को ले सकता। इसे शब्दिकार करने के बाद सदन की कार्पवाही रोक वी जाती है एवं सदस्य को बोली का धीका दिया जाता है।

④ द्वारा आलेखन प्रतिवाद (Calling Attention Motion) :-

सांविधानिक हृत के विषय की ओर असकार/पंची का द्वारा आलेखन करने के लिये इसका उपयोग किया जाता है। इसका उत्तम भारत में उपाया।

⑤ विशेषाधिकार प्रतिवाद (Privilege Motion) :-

इसी पंची के वारतालीक तथा को द्वारा कर गलत आलेखनी देला है तो इस सदन के विशेषाधिकार का उल्लंघन माना जाता है एवं कोई भी सदस्य पंची के विशेष प्रतिवाद को ले सकता है। (जीस-एमांड ईटी द्वारा किया गया)

मूल प्रतिवाद

Suspensive Motion

ऐसा प्रतिवाद जो सभां में एवं भाषा की तरह होता है अपने आप में स्पष्ट होता है इसमें सदन स्पष्ट अधिकारित एवं विवित एवं एवं स्पष्ट नहीं लिया जाता अपर्याप्ति अपने बातों का अद्वारा नहीं लिया जाता अपर्याप्ति अपने आप में स्पष्ट होता है सदन में अवश्य प्रतिवाद होता है। (जीस:-

① आविरकारा प्रस्ताव (No Confidence Motion)

50 भविष्यों के हस्ताक्षर एवं 7.5 वें लाया जाता है। इसके पादपद्म एवं विपक्ष सरकार के बहुमत भी जांच करता है। सर्विषयम् 1963 में कृपलानी बारा नेहरू सरकार के विरुद्ध पहले प्रस्ताव लाया गया, पारित नहीं हुआ।

[लोकसभा विदाते नहीं होती, इसी सरकार जानी जाती है]

एक बार प्रस्ताव आने के बाद 6 पहिने लक पर प्रस्ताव नहीं लाया जा सकता]

NOTE: [यद्यनात्मक आविरकारा प्रस्ताव (Constructive No-confidence Motion), जिसी पर लाया जाता है, जिसके द्वारा रसमें विपक्ष पदके भवन को बांहुमत करता है उसके बाद ली प्रस्ताव जा सकता है]

② विश्वासा प्रस्ताव:

प्रस्ताव के बाद राष्ट्रपाली सरकार को शायद लेलाई के बाद लोकसभा में बहुमत दिया जाने के लिये बहता है प्रधानमंत्री / राम. रामकृष्ण प्रसाद जिस पर वर्चों द्वारा प्रत्यानि होता है एवं बहुमत दिया हो जाने पर सरकार को संवैधानिक / कानूनी मान्यता प्राप्त हो जाता है। // विश्वासा प्रस्ताव 1.5 में लाये जा सकते हैं।



संकल्प शुल्क-प्रस्ताव की गोपी भी जाता है रसमें यह आविष्यातः प्रत्यानि होतां हैं पहली अंदर भी रट्टा का आविष्यकत जरने का प्रादृपद्य है और - अंतर्विद्धि संघीय भास्त्रीत पर हस्ताक्षर करता, अंतर्विद्धि का देयप्राप्त जाना आदि जाते।

नियम (Rule) :- (अनु० 118)

पर यी रांसदीय प्रतिपा द्वा० तो इससा हो बराले नाम प्रयोग।
जो संसद का सुचारू धर्मिक चलाया जाता हो अनु० 118
के तहत इसी बनाया रखा है।
जैसे ① नियम 104, विचार- विषय के बाद भवित्वाने की
प्रवर्धना।

② नियम 193 :- विचार-विषय के बाद भवित्वाने की प्रवर्धना
नहीं होती (इसी कारण सरकार इस नियम का उपाय
प्रयोग करती है) [असंतुष्ट दोनों नियम दोनों में भवित्वाने का प्रयोग
हो चाहिए नहीं]

③ नियम 56 :- लोकप्रबल के इसी मुद्रण पर विचार करता।

④ नियम 377 :- लोकप्रबल के मुद्रण पर यही प्रतिपा की
शुरुआत जैसे- शूतपकाल। [जो प्रथा है। कछुण भवित्वाने का उपाय
भवित्वाने का उपाय नहीं है। अनुचित नियमों का आवधि नहीं है।]

⑤ नियम 41 :- संसद में इसे बाले वाले प्रश्नों की शर्तों का
उल्लेख है [विद्यार्थी, अवृत्तिर्थी ... एवं ... शर्तों के उल्लेख]

NOTE: अनु० 26 बार आविश्वास प्रतान ऐसी नहीं है। जैसा 1 बार ही
नियम को सफलता मिली। आरतीय संसद में पहली बार आविश्वास
प्रस्ताव 1963 में P.C. Nehru के शिलालय आया था। (पौ. वी. लूष्टनी
धारा) but fail'd., जाल लाइट के 3 बाले के काफिकाल में 3 बार
आविश्वास प्रस्ताव but (X). अब यही ब्यादा आविश्वास प्रतान नंदेर
गांधी के शिलालय। (15 बार) (21 बार) ज्यादा आविश्वास प्रस्ताव.

ऐसा करने का कोई पाकरवादी विषय नहीं न होता है योहे
कर्य के नाम है, चारों प्रतान इंद्रो गांधी के शिलालय)

- 1948 में प्रोराजनी केसार के शिलालय 2 बार - 1978 में इसी प्रस्ताव
आविश्वास प्रस्ताव पास होने की शर्त ही बोग थी ~
- अल्ल. विद्यार्थी वानपेती के अनुप्रय 2 बार - 1999 में ए दूर गयी थी यह
2003 में 12वीं बीते की बीत ~
- 2008 में नामांगन - नाम नहीं.

What is the right

ਪਾਂਚ ਵਜੇ ਪੜ੍ਹੀ ਵਿੱਚ ਸ਼ਹੀਦ ਕਰਾਈ ਗਈ ਹੈ। ਅਤੇ ਉਸ ਵਿੱਚ ਸ਼ਹੀਦ ਕਰਾਈ ਗਈ ਹੈ। ਅਤੇ ਉਸ ਵਿੱਚ ਸ਼ਹੀਦ ਕਰਾਈ ਗਈ ਹੈ।

Chart of Conf / Negat /

विपक्ष कामों को बताकर जनसाधारण जुटाता है इस
तरह सरकार को निरंतर कार्रवाई की प्रेरणा
मिलती है।

सम्पर्क :-

- भारत में विपक्ष शेख-शाराबा, बाहुगमन, दोराव, आदि पहल-ओं पर उपाय लेते हैं। जिससे सरकार का सम्पर्क औ जनता को दूर बढ़ाता है।
- भारत में विपक्षी दल अनुत्तरवाची ज्ञानिका विद्या पर है जो भरा प्राप्त करने के लिए विपक्षी दल जीकान्त्रों की रक्षा के लिए लोगों गठबंधन करता है जिससे विपक्ष की कार्रवाई विसर्जित हो रही है।
- विपक्षी दल में नकारात्मक प्रवाचियां उपाय हैं जहाँ सामाजिक आर्थिक परिवर्तनों से संबंधित विद्यों को पर विदेश देता। जैसे- मालिना आरदाज विदेश पर १९८०-८१ १९८१
- विपक्ष अक्षरतामौ हो गया है व्यक्तिगत / पारिवारिक पहलों पर आलोचना करता है तोरा कार्यक्रम उत्तुत करता।

सुझाव :-

- भास्तव्य विचारदारों द्वारा वाले दल आपसा में भिन्न-भिन्नी दलीय संगठन पञ्चवृत्त होगा। वीकालिपि व्यवस्था का भी फ़िकास होगा।
- भत्तारुद्ध दल का भी दायित्व है जो विपक्ष की ज्ञानिका को अपनी छाड़ी सरकार के भीतर उसे उपाय भप्यं दोनों सामित्रियों में भीका करें।
- विपक्ष को भी अपने भास्तव्य विचारदारी से पर छोड़ना चाहिए, कामों परिसर को बदला देना चाहिए।

शासनों के बदलते सामाजिक-आर्थिक परिवर्त्यः

आजस्तीके लाल निरंतर सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों ५

$V5 \rightarrow mLN$
 $VP \rightarrow mLC$

ਲੋਕਾਵਾਦ ਕਾ ਅਰਜੁਵ :

S

- राजनीति परंपरा हमें के लाए शहरी दृष्टि विचार के लिए
राष्ट्रीयता-विद्यापक नहीं ही अपनी शहरी राजनीति
को बढ़ावा देना होता के लाए माध्यम समझ
में जागरूकता नहीं लगाता भी ऐसे लोगों को विकास
द्वारा माध्यम प्रशंसनीय के लिए भी राजनीतिक नियम
लगाए जाएं। जेंडरल विकास, राजनीति, चर्चा आदि
 - पुरुषों के रोल में विभिन्न रूपों लिए जाएं। शहरी
राजनीति वही थी कि ऐसे लोगों की जब भी विद्या देनी
या लेनी 1990 के लाए मध्यम से जब भी विद्या देनी
राजनीति में अभी रहे हैं तो इन लिए, एवं विवाहित
शिक्षा, ग्रामीण राजनीति, विवाह, जल-राजनीति, बेल
जूद से जुड़े जोग जी राजनीति में अभी रहे हैं
 - पाठ्यक्रमों की सीधे भी पाठ्यक्रम आया है तो पहली
जोकरामा में केवल 4.4%, जलवायी 16 एवं 7.5% लाइक
12% पाठ्यक्रमों के माध्यम प्रशंसनीय की नीति देखी
जी राजनीति में आ रही है पाठ्यक्रम आजकल घर जी
ले दिया जा रहा है

जाति का राजनीतिकरण & वर्ष के राजनीति का पात्र।
करण हो जाए & इसीलिए, राजनीति & अपराध के
सम्बन्ध बढ़े & जगा।

भूत्यांकन: यह धनार, सेन्टर है औ भाजपा की दोनों दलों
शासन पुराली है विद्यायिका आप जनता का प्रतिरौपिणी
दिल्ली करती है जोकि नकारात्मक व्यवहारों संसद की
प्रारंभ को प्रचारित कर रही है जोकि कारण ओवित्य
यह विकास की आवश्यकता पृष्ठस्थान हो रही है

IAS